क़ुरबानी ईद

qurbānī īd

Why we Celebrate Eid ul-Azha

(Urdu—Hindi script)

© 2019 D. Denness
published and printed by
Good Word Communication Services Pvt. Ltd.
New Delhi, INDIA

Bible text is from UGV.
illus.: R. Gunther (www.freebibleimages.org)

for enquiries or to request more copies:
askandanswer786@gmail.com

हम क़ुरबानी ईद के मौक़े पर क्या बात याद करते हैं?

यह अज़ीम ईद उस क़ुरबानी की याद दिलाती है जो अल्लाह ने हज़रत इब्राहीम से तलब की। कौन-सी क़ुरबानी? अपने बेटे की क़ुरबानी। लेकिन इस क़ुरबानी का क्या मक़सद था? हम इसे क्यों मनाते हैं?

तौरेत जिस में इसका सबसे क़दीम ज़िक्र है, इस मक़सद पर रौशनी डालती है।

हज़रत इब्राहीम आम आदमी नहीं थे। वह ख़लीलुल्लाह यानी ख़ुदा के दोस्त कहलाते थे। लेकिन गो अल्लाह ने उनसे बेटे का वादा किया था तो भी उन्हें बहुत-से साल इंतज़ार करना पड़ा। आख़िरकार जब वह 100 साल और उनकी बीवी 90 साल की थीं यह मोजिज़ा हुआ कि उनके बेटा पैदा हुआ।

लड़का बढ़ा और जवान हो गया। तब अल्लाह हज़रत इब्राहीम को आज़माकर उनसे हमकलाम हुआ, “ऐ इब्राहीम!”

इब्राहीम ने जवाब दिया, “जी, मैं हाज़िर हूँ।”

ख़ुदा के अगले अलफ़ाज़ से उनको सख़्त सदमा पहुँचा। “अपने इकलौते बेटे को जिसे तू प्यार करता है साथ लेकर मोरियाह के इलाक़े में चला जा। वहाँ मैं तुझे एक पहाड़ दिखाऊँगा। उस पर अपने बेटे को क़ुरबान कर दे।”

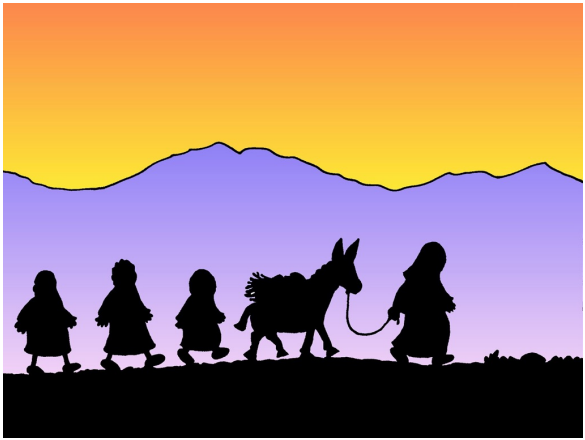

इस सख़्त हुक्म का क्या मक़सद था? अल्लाह तो इनसान से मुहब्बत रखता है। उसी ने इनसान को बनाकर हुक्म दिया था कि इनसान को क़ुरबानी के तौर पर चढ़ाना सख़्त मना है। तो ख़ुदा यही कुछ क्यों तलब कर रहा था?

इस क़ुरबानी से अल्लाह तआला मुस्तक़बिल के एक अज़ीम वाक़िये की तरफ़ इशारा करता है। इसके लिए लाज़िम था कि हज़रत इब्राहीम मोरियाह के पहाड़ पर जाकर अपने बेटे को ज़बह करने के लिए तैयार हो।

हज़रत इब्राहीम के मुँह से इनकार का एक लफ़्ज़ भी न निकला बल्कि वह सुबह-सवेरे उठे, लकड़ियाँ काटीं और गधे पर ज़ीन कसी। अपने जवान बेटे और दो नौकरों को साथ लेकर वह रवाना हुए। बेटा बड़ी ख़ुशी से घर से निकला। अपने अब्बू के साथ वक़्त काटना कितना अच्छा लगता था। उसे क्या मालूम कि अल्लाह ने उसे क़ुरबान करने का हुक्म दिया है।

सफ़र करते करते तीसरे दिन क़ुरबानी की जगह दूर से नज़र आई।

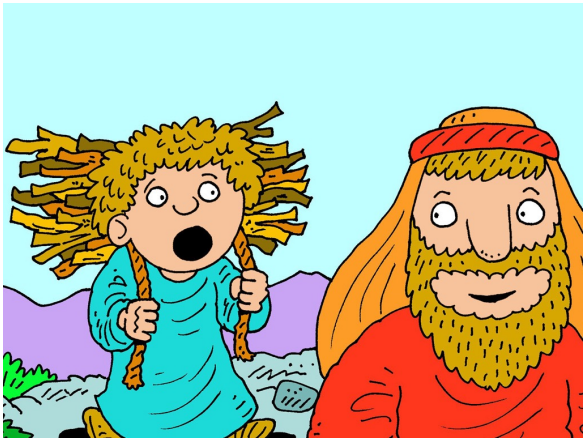

उन्होंने नौकरों से कहा, “यहाँ गधे के पास ठहरो। मैं लड़के के साथ वहाँ जाकर परस्तिश करूँगा। फिर हम तुम्हारे पास वापस आ जाएँगे।” उस वक़्त भी हज़रत इब्राहीम का ईमान था कि दोनों ही वापस आएँगे।

बाप ने क़ुरबानी को जलाने के लिए लकड़ियाँ बेटे के कंधों पर रख दीं और ख़ुद छुरी और आग जलाने के लिए अंगारों का बरतन उठाया। दोनों चल दिए। बेटा बोला, “अब्बू!”

इब्राहीम ने कहा, “जी बेटा।”

“अब्बू, आग और लकड़ियाँ तो हमारे पास हैं, लेकिन क़ुरबानी के लिए भेड़ या बकरी कहाँ है?”

क़ुरबानी का मक़सद क्या है? इसका असल मक़सद यह है कि गुनाहगार इनसान को अल्लाह तआला की क़ुरबत मुहैया करे।

इनसान फ़ितरी तौर पर अल्लाह से दूर है। क्यों? अल्लाह मुक़द्दस और पाक है जब कि इनसान गुनाहगार है। उसकी फ़ितरत नाक़िस है। इसलिए वह ख़ुदा के हुज़ूर नहीं आ सकता बल्कि उसे एक एवज़ी की ज़रूरत है, एक क़ुरबानी जो उसके बदले चढ़ाई जाए।

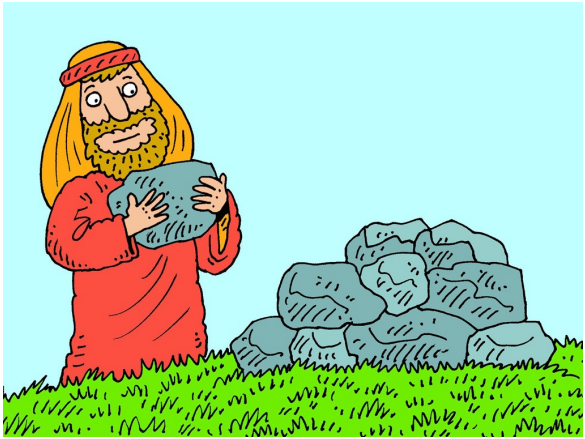

हज़रत इब्राहीम ने जवाब दिया, “अल्लाह ख़ुद क़ुरबानी के लिए जानवर मुहैया करेगा, बेटा।”

वह आगे बढ़ गए। चलते चलते वह पहुँच गए। अब अपने प्यारे बेटे को क़ुरबान करना था। लेकिन अब भी बेटा ताबेदार रहा। फिर बाप ने उसे बाँधकर क़ुरबानगाह पर लिटा दिया। उन्होंने छुरी को पकड़ लिया ताकि अपने बेटे को ज़बह करें।

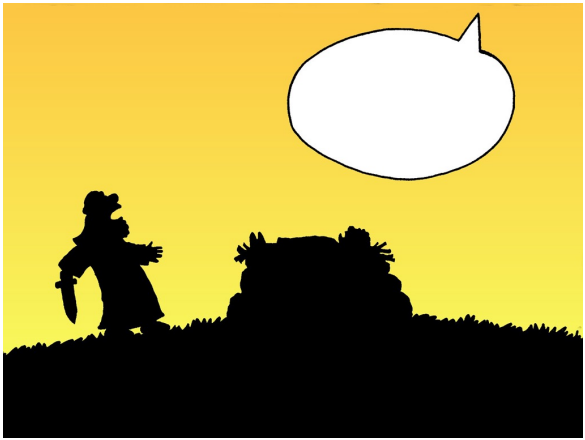

कुंबे का लाडला अपने बाप के हाथ मरने के लिए तैयार हुआ। उसने ख़ामोशी से मौत का सामना किया।

मगर ऐन उसी वक़्त रब के फ़रिश्ते ने आसमान पर से उसे आवाज़ दी, “इब्राहीम, इब्राहीम! अपने बेटे पर हाथ न चला, न उसके साथ कुछ कर। अब मैंने जान लिया है कि तू अल्लाह का ख़ौफ़ रखता है, क्योंकि तू अपने इकलौते बेटे को भी मुझे देने के लिए तैयार है।”

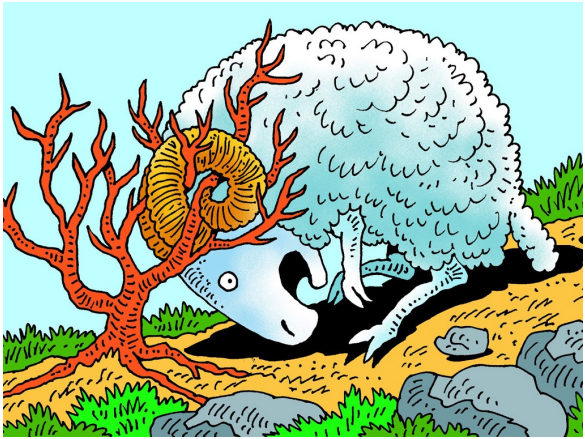

बाप और बेटे दोनों की जान में जान आ गई। फिर भी क़ुरबानी पेश करने की ज़रूरत थी। अचानक हज़रत इब्राहीम को एक मेंढा नज़र आया जिसके सींग गुंजान झाड़ियों में फँसे हुए थे। बड़ी ख़ुशी से अपने बेटे को आज़ाद करके बाप ने जानवर को अपने बेटे की जगह क़ुरबानी के तौर पर जला दिया।

बहते हुए ख़ून को देखकर लड़के ने सोचा होगा कि यह मेरा ही हाल हो सकता था! शुक्र है कि यह मेरी जगह क़ुरबान हुआ है।

अल्लाह ने हज़रत इब्राहीम को सख़्त आज़माया था, और वह इस मुश्किलतरीन इम्तहान में कामयाब निकले थे। लेकिन इस मामले के पीछे क्या मक़सद था? हज़रत इब्राहीम के अगले अलफ़ाज़ क़ाबिले-ग़ौर हैं। चूँकि वह नबी थे इसलिए उन्होंने उस जगह का नाम "रब मुहैया करता है" रखा। बाद में यह मुहावरा बन गया और लोग कहा करते थे, "रब के पहाड़ पर मुहैया किया जाता है।"

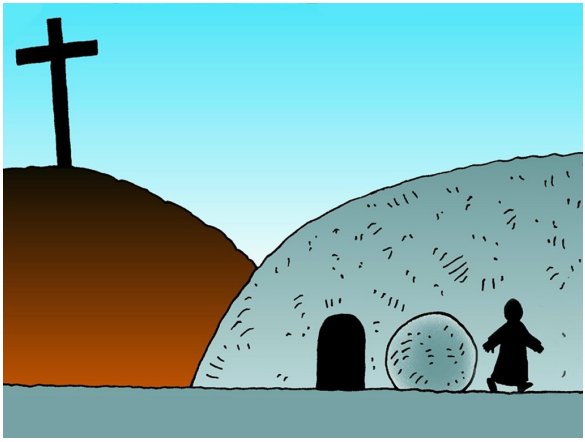

दो हज़ार साल के बाद अल्लाह तआला ने इसी पहाड़ यानी यरूशलम के पहाड़ पर एक कामिल क़ुरबानी मुहैया की। उस वक़्त हज़रत ईसा वहीं क़ुरबान हुए—बिलकुल उसी तरह जिस तरह हज़रत यहया उनके बारे में फ़रमा चुके थे, "देखो, यह अल्लाह का लेला है जो दुनिया का गुनाह उठा ले जाता है।"

हज़रत ईसा भी अपने बारे में फ़रमा चुके थे कि मैं अपनी जान इनसान के गुनाहों को मिटाने के लिए क़ुरबान करके उसे ख़ुदा के क़रीब लाऊँगा। और ऐसा ही हुआ। उन्होंने अपनी जान दी और पेशगोई के मुताबिक़ तीसरे दिन दुबारा ज़िंदा हुए। अल्लाह तआला ने उनकी कामिल क़ुरबानी क़बूल कर ली।

बुनियादी मसला यह है कि इनसान पाक-साफ़ नहीं है। उसे जन्नत और अल्लाह की क़ुरबत हासिल नहीं हो सकती। न सवाब और न ही अपनी जान की क़ुरबानी हमें ख़ुदा की क़ुरबत दिला सकती है। इसलिए अल्लाह ने हमें एक अज़ीम और अनोखा वसीला मुहैया किया। उसने हज़रत ईसा को भेज दिया ताकि वह काम करे जो हमसे नहीं हो सकता। उनका ख़ून हमें तमाम गुनाहों से पाक-साफ़ कर देता है। वह मर गए ताकि हमें ख़ुदा तक पहुँचाएँ। उन्होंने हमारे गुनाह की सज़ा बरदाश्त की ताकि हमें माफ़ी मिले। इस कामिल क़ुरबानी से अल्लाह की क़ुरबत और रसाई मुमकिन हो गई है।

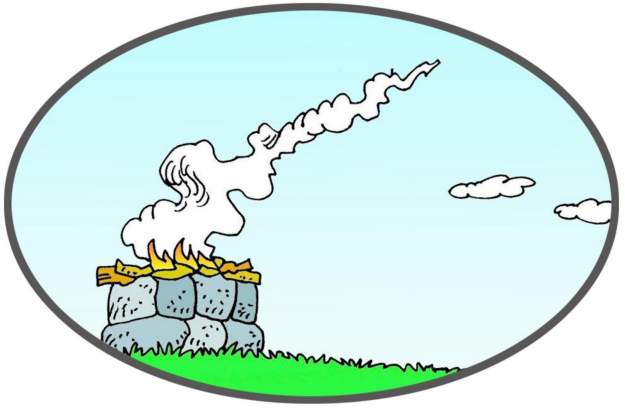

हज़रत इब्राहीम की क़ुरबानी हमें याद दिलाती है कि

- क़ुरबानी का मक़सद गुनाहों की माफ़ी और अल्लाह की क़ुरबत है।
- जानवर की क़ुरबानी ख़ुद नामुकम्मल है बल्कि वह कामिल क़ुरबानी की तरफ़ महज़ इशारा है।
- दो हज़ार साल के बाद अल्लाह तआला ने वही कामिल क़ुरबानी उसी पहाड़ पर मुहैया की। उस वक़्त क़ुरबानी ईद हज़रत ईसा की जान की क़ुरबानी से तकमील तक पहुँची।

हज़रत ईसा अल-मसीह ने फ़रमाया,

> यह न समझो कि मैं मूसवी शरीअत और नबियों की बातों को मनसूख़ करने आया हूँ। मनसूख़ करने नहीं बल्कि उनकी तकमील करने आया हूँ। मैं तुमको सच बताता हूँ, जब तक आसमानो-ज़मीन क़ायम रहेंगे तब तक शरीअत भी क़ायम रहेगी—न उसका कोई हरफ़, न उसका कोई ज़ेर या ज़बर मनसूख़ होगा जब तक सब कुछ पूरा न हो जाए। (इंजीले-मुक़द्दस, मत्ती 5:17-18)